P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-9*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

प्रेम शंकर रघुवंशी की कविताः समकालीन यथार्थ की पहचान

हंसराज चौहान
सहायक आचार्य,
हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
होद, सीकर,
राजस्थान, भारत

सारांश

समकालीन कविता परिदृश्य में वरिष्ठ कवि प्रेमशंकर रघुवंशी का नाम किसी परिचय की दरकार नहीं रखता। व्यापक सामाजिक और समकालीन सरोकारों से जुड़ी उनकी कविता ने समकालीन हिन्दी कविता को कई रूपों में प्रभावित कर नयी शक्ति प्रदान की है। प्रेमशंकर रघुवंशी की कविता समृद्ध है। उसमें जीवन के लिए अपार सम्भावनाएं है, जीवन का मूल्यांकन करने के लिए सही समझ है और एक ऐसे कवि का चेहरा भी है जो अपने आप को बराबर जनजीवन के बीच पाता है। प्रेमशंकर रघुवंशी की कविताओं का संसार विरल रूप से बहु आयामी है। अधिकाशं कविताएं संघर्ष की है। यह जीवित और जाग्रत मनुष्य का मूल स्वभाव है। संघर्ष ही जो कबिलाई जीवन को आधुनिक विचार और विज्ञान की दुनिया तक लाया है।

मुख्य शब्द : समकालीन कविता, प्रेमशंकर रघुवंशी।

प्रस्तावना

कविता की दुनिया उतनी ही विविध एवं बहुआयामी है जितना मनुष्य स्वयं। मनुष्य कविता का रचयिता है। वह अपने जीवन व्यक्तित्व की तरह कविता को भी व्यक्तित्व प्रदान करता है। जो ऐसा नहीं कर पाते, वे कविता के आंगन में कुछ दिन धमाचौकड़ी मचाकर कवितेतर दुनिया को लौट जाते हैं। किन्तु जो अपने अनुभव, संवेदना और ज्ञान के बल से अपनी कविता की जमीन तैयार कर लेते हैं, वे अपने समय की कविता को समृद्ध व्यक्तित्व प्रदान करते हैं। एक कवि का अपनी जमीन से जुड़ाव कितना है, यह उसकी सम्पूर्ण भाव प्रक्रिया और परिवेश के निकट साक्षात्कार से मालूम होती है। कवि प्रेम शंकर रघुवंशी ऐसे ही सर्जक हैं, जिनकी कविता हिन्दी की उस काव्य परम्परा का विकास है, जो निराला ने 'महगू महंगा रहा', झींगुर डटकर बोला, 'वह तोड़ती पत्थर' जैसी कविताएं लिखकर आधुनिक हिन्दी कविता में एक नयी काव्य परम्परा का श्रीगणेश किया। कवि का विकास निराला वाली जनवादी काव्य परम्परा में होता है पर धीरे–धीरे वे निराला की परम्परा में गुणात्मक विकास करते हुए उससे व्यावर्त्त भी करते जाते हैं। अपने पहले कविता संकलन 'आकार लेती यात्राएं से लेकर 'प्रणय का अनहद' कविता संकलनों में कवि प्रेम शंकर रघुवंशी कविता का कथ्य, नक्षा और सम्पूर्ण स्थापत्य के साथ–साथ नवीन उद्भावनाओं का सर्जन भी करते हैं।

समकालीन कविता परिदृश्य में वरिष्ठ कवि प्रेमशंकर रघुवंशी का नाम किसी परिचय की दरकार नहीं रखता। व्यापक सामाजिक और समकालीन सरोकारों से जुड़ी उनकी कविता ने समकालीन हिन्दी कविता को कई रूपों में प्रभावित कर नयी शक्ति प्रदान की है। प्रेमशंकर रघुवंशी की कविता समृद्ध है। उसमें जीवन के लिए अपार सम्भावनाएं है, जीवन का मूल्यांकन करने के लिए सही समझ है और एक ऐसे कवि का चेहरा भी है जो अपने आप को बराबर जनजीवन के बीच पाता है।

रघुवंशी की कविताएं एक मुकम्मल कविता है, जिनमें साफ झलकता है कि कवि जहां रहता है, वहॉ वह अपने आसपास, अपने परिवेश, अपनी प्रकृति, अपनी भूमि–वनस्पति, अपने जन के प्रति खुली व सावधान नजर रखता है।

''उजाड़ पहाड़ की छाती पर खड़ा
अकेला पेड़
कभी इससे कभी उससे और
हमेशा हमेशा गुरूत्वाकर्षण से संघर्षरत
हवा को चीरता
और – और ऊँचा और और चौड़ा होता जाता
और अपने तले

विश्राम करने वाले पशुओं, पक्षियों, पथियों से
बिना किसी की शिकायत किये
जिन्दगी की छांह गाता है।''

प्रेमशंकर रघुवंशी की कविताओं का संसार विरल रूप से बहु आयामी है। अधिकाशं कविताएं संघर्ष की है। यह जीवित और जाग्रत मनुष्य का मूल स्वभाव है। संघर्ष ही जो कबिलाई जीवन को आधुनिक विचार और विज्ञान की दुनिया तक लाया है। रघुवंशी की कविताओं में यह संघर्ष बाहरी या दिखाऊ नहीं है बल्कि छोटे–छोटे रूपों में बड़ा बनता है। लोक के दैनंदिन जीवन व संघर्ष को रघुवंशी की कविताएं बड़े केनवास पर ऐसे उकेरती है जैसे वे समस्याएं एक गांव सा एक व्यक्ति की न होकर हम सबकी है–

''मैंने
वसीयत में
लिख दिया
राष्ट्र के नाम अपना राष्ट्रगीत
राष्ट्र ध्वज
राष्ट्र भाषा और संविधान अपना
लिख दिया
विश्व के नाम
चांद तारे
हवा, पानी प्रकाश–पर्यावरण
नहीं लिखा
विनाश का कोई शब्द।''

लोक प्रकृति, लोक जीवन के व्यापक रंग, संघर्षशील मनुष्य की सुख–दुखात्मक अनुभूतियॉ एवं मनुष्य एवं प्रकृति के द्वन्द्वात्मक सम्बंधों की दृष्टि से हिन्दी की समकालीन कविता का शोध विश्लेषण नहीं हुआ है। प्रेमशंकर रघुवंशी की कविता की यह बड़ी शक्ति है निराश, दुःखी, हताषा से भरे व्यक्तियों को जीवन की ओर खींचने का सार्थक प्रयत्न करती हैं। इस दृष्टि से समकालीन कविता के मूल्यांकन का प्रयास प्रस्तुत शोध पत्र में है।

कवि प्रेमशंकर रघुवंशी की दृष्टि वैज्ञानिक व वैष्विक है, इस नजर में इकहरापन नहीं है, यह एकांगी नहीं है, इसमें द्वन्द्वात्मकता है। वह अपने आसपास को भी नहीं छोड़ती और दूर को भी नहीं। वह स्थानीय होकर सार्वभौमिक है। वह देशज होकर सार्वदेशिक है। रघुवंशी की कविता में जो वैशिस्ट्य दिखाई देता है वह उनकी कविता के पांवों के नीचे उनकी अपनी जमीन का होना है। श्रम सौंदर्य की एक अनूठी दुनियस सर्वत्र व्याप्त है। ज्ञान और संवेदना मिलकर रघुवंशी का इन्द्रियबोध व्यापक और विस्तृत करते हैं।

जीवन–स्थितियों के प्रतीकात्मक बयान और चित्रण करने में रघुवंशी एक कुशल शिल्पी हैं। वे अपने समय की विसंगतियों को, विडम्बनाओं को बहुत सहजता के साथ चित्रित करते हैं। रघुवंशी अपने वर्गीय जीवन की सीमाओं का अतिक्रमण करते हुए खुले आंगन में बाहर निकलते हैं और प्रयास करते है कि कविता का अर्थ भूमि का विस्तार हो। कविता को पूरी पृथ्वी कहने वाला कवि अपनी कविता में उसका प्रमाण भी देता है–

''कुम्हार के रोम–रोम में समाती
धरती की सोंधी प्राण गंध
अंग–अंग में कुनकुना स्पर्श
जुबान पर फसलों की शरबती मिठास
और कानों में
सृजनाकुल किलकारियां
पलकों में अपलक स्वप्न थामें
ख्यालों में डूबा कुम्हार
घुमा रहा चक्कर लगातार।''

जीवन का सच रचते हुए भी उनकी कविता नीरस और सतहीपन से बंधी रहती है। न उसमें जड़ता का समावेश होता है और न ही कृत्रिमता का। हां, एक सहज गति और लय कविता में बनी रहती है। कहना न होगा कि युग जीवन यथार्थ की पेचीदगियों की वजह से यहां कविता का संसार अत्यंत विस्तृत और वैविध्यपूर्ण दिखायी पड़ता है। जीवन–अनुभवों की निरंतर बदलती छवियों से शिल्प को भी लगातार नये–नये रूपों में ढ़ल जाने को विवश होना पड़ता है। युग की मांग के अनुरूप रघुवंशी ने कई जमीनें तोड़ती और सिरजी भी है। कवि प्रेमशंकर रघुवंशी के काव्य संसार को इस द्वन्द्वात्मक पृष्ठभूमि में देखने–परखने का प्रयास भी प्रस्तुत शोध पत्र में किया गया है।

डॉ. जीवन सिंह मानवी ने लिखा है – ''प्रेमशंकर रघुवंशी की लम्बी कविताएं जीवन को नाट्यरूप में प्रस्तुत करके अलग पहचान में आने वाली मंथर गति की कविताएं है जिनमें ऊपर से देखने में जीवन ठहरा हुआ सा लग सकता है। दरअसल ये कविताएं इस अर्थ से भी सौंदर्य की कविताएं है, जहॉ समृद्धि की छल–कपट भरी दुनियां से अलग एक ऐसी कर्मनिष्ठ दुनियां का विस्तार है, जो आज भी हिन्दी के जातीय जीवन की उपेक्षित एवं तिरस्कृत वास्तविकता है। कहना न होगा कि उपेक्षित सौंदर्य को सकेलने के कारण ही रघुवंशी का कवि अर्थवान बना।''

समकालीन युगबोध और सौंदर्य बोध से सम्पन्न कवि प्रेमशंकर रघुवंशी को मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी के 'दुस्यंत कुमार' एवं 'बालकृष्ण शर्मा नवीन' पुरस्कार, मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन का 'वागीश्वरी पुरस्कार' के साथ–साथ 'अक्षर आदित्य सम्मान', 'आर्य कल्प पुरस्कार', दिव्य पुरस्कार' व प्रमोद वर्मा पुरस्कारों से विभूषित किया गया है। इनके अलावा अन्य अनेक पुरस्कार भी उनको मिल चुके हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

लेखक का प्रयास यह है कि समकालीन दृष्टि, युगीन परिदृश्य, समकालीन यर्थात, कविता की आज की शक्ति, लोक जावन प्रवाह व संघर्ष एवं सौंदर्य आदि समकालीन कविता के व्यापक आयामों से प्रेमशंकर रघुवंशी की कविता महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

कवि की समकालीन कविता व लोक जीवन मूल्यों के प्रति गहरी आस्था है। और कवि प्रेमशंकर रघुवंशी के काव्य में समकालीन यर्थात लोकजीवन मूल्यों के अनुशीलन की अकूत सम्भावनांए हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

प्रेमशंकर रघुवंशी – देखो सांप तक्षक नाग, परिमल प्रकाशन, इलाहबाद
प्रेमशंकर रघुवंशी – डूबकर भी नहीं डूबा हरसूद, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
प्रेमशंकर रघुवंशी – नर्मदा की लहरों से, मेधा बुक्स, दिल्ली
प्रेमशंकर रघुवंशी – मुक्ति के शंख, परिमल प्रकाशन इलाहबाद
प्रेमशंकर रघुवंशी – सिलसिले चिठ्ठी के, नेशनल पब्लिसिंग हाउस नई दिल्ली